145वें मर्यादा महोत्सव

निष्ठा पैदा करने का महान पर्व है : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 2 फरवरी, 2009।

राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने 145वें मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में अपने संघ के नाम सन्देश में कहा कि आचार्य भिक्षु ने मर्यादा का निर्माण किया यह मेरी दृष्टि में उतना बड़ा कार्य नहीं है जितना बड़ा कार्य है उन्होंने मर्यादाओं के प्रति निष्ठा पैदा की। निष्ठा के कारण ही तेरापंथ अखण्ड बना हुआ है और इतने लंबे अर्से से मर्यादाओं का पालन हो रहा है। निष्ठा के अभाव में मर्यादाएं छिन्न-भिन्न हो जाती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मर्यादा महोत्सव में भाग लेने दूर-दूर से आने वाले साधु-साध्वियों एवं श्रावक समाज को ध्यान देना चाहिए कि मर्यादा महोत्सव निष्ठा पैदा करने का महान पर्व है। इसमें केवल गाने एवं बोलने के लिए ही नहीं भाग लिया जाता है बल्कि इस आयोजन से सबमें मर्यादाओं के प्रति निष्ठा पैदा की जाती है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि निष्ठा तब पैदा होती है जब अहं का विलय होता है। अहं के कारण ही आज लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। हमारी जितनी संस्थाएं हैं उनका निर्माण धर्म के लिए हुआ है वहां भी लड़ाई-झगड़े होते हैं तो इसके पीछे अहं ही है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मर्यादा महोत्सव में भाग लेने वाले का अहं विलय नहीं होता है तो भाग लेने की कोई सार्थकता नहीं होगी।

पूर्व सरकार के प्रति प्रमोद भावना रखें : आचार्य महाप्रज्ञ

राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अपने अभिभाषण में कहा कि राजनेता पीछली सरकार की कमियों एवं निंदा करने में ही समय ज्यादा लगा रहे हैं। अच्छाई पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। इस सन्दर्भ में अनेक राजनेताओं से पूछ चूका हूं पर अभी तक उत्तर नहीं मिला है। प्रमोद भावना होने पर सारे झगड़े खत्म हो जायेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने निष्ठा पैदा करने के लिए मैत्री भाव को भी जरूरी बताते हुए कहा कि शत्रुताभाव के कारण कोई भी संगठन मजबूत नहीं बन सकता। जिस संगठन में एक दूसरे के प्रति शत्रुता पैदा करने वाले सदस्य होते हैं वह संगठन कभी भी विकास नहीं कर सकता। आचार्य प्रवर ने युवाचार्य महाश्रमण की तरफ इशारा करवाते हुए कहा कि अब तुमको ध्यान देना है कि संघ में प्रमोद, मैत्री, अहं विलय एवं मर्यादा के प्रति निष्ठा का जागरण कैसे कायम रहे। संघ निर्माण का दायित्व कुशलता से निभाना है।

हाजरी रही आकर्षण का केन्द्र

आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाओं के पुनरावर्तन पर 'हाजरी' का वाचन हुआ। इस क्षण साधु-साध्वियां एवं समणियों की बनी लंबी कतार सबके आकर्षण का केन्द्र रही। सभी साधु-साध्वियों ने दीक्षा क्रम से लाईन में खड़े हुए। आचार्य महाप्रज्ञ ने मर्यादापत्र का वाचन करते हुए सभी साधु-साध्वियों, समण-समणियों को संकल्प दौहराये।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा लोकतंत्र में जागीदारी बहुत बाद में खत्म हुई है। पर आचार्य भिक्षु ने 250 वर्ष पहले ही जागीदारी को खत्म कर दिया। आचार्य प्रवर ने कहा कि पता नहीं आचार्य भिक्षु का क्या मस्तिष्क था कि उन्होंने इतनी दूरदृष्टि से मर्यादाओं का निर्माण किया वे विलक्षण मस्तिष्क के धनी तभी ऐसी सोच को प्रस्तुत कर पाये। उन्होंने कहा कि वर्तमान में उत्तराधिकारी की समस्या बहुत है हर कोई उम्मीदवारी जताता है। आचार्य भिक्षु ने इस समस्या पर चिंतन किया और एक आचार्य का नेतृत्व दिया। एक नेतृत्व के कारण ही तेरापंथ विकास कर पाया है।

साधु-साध्वियों की संख्या 500 के पार

हाजरी वाचन के दौरान युवाचार्य महाश्रमण ने बताया कि बीदासर के ऐतिहासिक महोत्सव पर साधु 83, साध्वियां 308, समणियां 104, कुल योग 504 है। इस जानकारी के साथ ही जनसमुदाय ने ओम अर्हम की ध्वनि से हर्ष व्यक्त किया।

आचार्य महाप्रज्ञ शांति, करूणा के आदर्श है - युवाचार्य महाश्रमण

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि मैंने अपने जीवन में कभी आचार्य श्री महाप्रज्ञ के व्यवहार और स्वभाव में तेजी नहीं देखी। आप शांति और करूणा के आदर्श हैं। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य केन्द्रीत धर्मसंघ है। अपने पीछे उत्तराधिकारी का चयन करने का अधिकार भी आचार्य के पास ही होता है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ का आचार्य पद उसी को मिल सकता है जो प्रबल पुण्य का धारक होता है।

'महात्मा महाप्रज्ञ' औति का विमोचन

युवाचार्य महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन दर्शन आधारित अपनी औति 'महात्मा महाप्रज्ञ' के विमोचन हेतु आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित की। आचार्य प्रवर ने उनका विमोचन किया।

साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा ने कहा कि जैन शासन की परंपरा में तेरापंथ धर्मसंघ का अपना इतिहास है। जो एकात्मकता, पारस्परिक सौहार्द, सेवा, सुश्रुषा, प्रमोद, मैत्री, शांति, अनुशासन, मर्यादा निष्ठा का प्रतीक है। जो आध्यात्मिक व्यक्तित्व के निर्माण में अपना विश्वास रखता है।

इस अवसर पर मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं', मुनि उदित कुमार, शासन गौरव साध्वी राजीमती, प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि कि-नलाल आदि ने अपना उद्‌बोधन दिया। मुनि दिनेशकुमार, मुनि सुव्रतकुमार, मुनि रजनीशकुमार, मुनि भव्य कुमार, मुनि स्वस्तिक कुमार ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी।

आचार्य महाप्रज्ञ मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल सेखानी, मंत्री कन्हैयालाल गिड़िया, स्वागताध्यक्ष भीखमचन्द नाहटा, तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक लालचन्द सिंघी, कन्हैयालाल छाजेड़, नरेन्द्र श्यामसुखा ने अपने विचार रखे।

आस्था का सैलाब उमड़ा

मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में सोमवार को आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। इस समारोह में संपूर्ण देश-विदेश से हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। चारों ओर कस्बे के मुख्य मार्ग भीड़ से पटते दिखाई दिये तथा चारों ओर वातानुकूलित छोटी-बड़े वाहनों का काफिला नजर आया। श्रद्धालुओं के हुजूम ने बीदासर कस्बे का रूप ही बदल दिया।

व्यवस्थापकों को मिली शाबासी

आचार्य महाप्रज्ञ मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की ओर से सुन्दर एवं सुव्यवस्थित आयोजन के लिए देश भर के श्रद्धालुओं ने भूरी-भूरी प्रशंसा की एवं शाबासी भी दी।

- अशोक सियोल

99829 03770